International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 71-72

''नारी अस्मिता का विमर्श'' प्रभा खेतान के उपन्यास "छिन्नमस्ता" के विशेष संदर्भ में

कंचन भाणावत

गाँव-शहीद राजेंद्र नगर, तहसील-भदेसर, जिला-चित्तोडगढ़, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

पुरुष और नारी, समाज की दो मुलभूत ईकाईया है। दोनों के संयोग से समाज का सृजन होता है। पुरुष आकाश है तो नारी धरा नारी की संगति से ही पुरुष सभ्य बनता है। नारी के बिना पुरुष के अस्तित्व की रचना संभव ही नहीं है। नर धात्री होने के कारण उसे नारी कहा गया है। 'नारी' शब्द स्वत: सम्पूर्ण व निरपेक्ष सत्ता का बोध करता है जिसमे शक्ति, सौंदर्य, शील, त्याग, कर्तव्य परायणता, उत्सर्ग आदि सभी तत्व समाहित होते है| सामाजिक व पारिवारिक संचालन मे दोनों भूमिका अहम होती है|

समकालीन युग में नारीवाद, नारी अस्मिता, नारी विमर्श, नारी सशक्तिकरण जैसे सभी विषय विश्वव्यापी मुद्दे है। सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक स्तर पर बहसें, विमर्श, आंदोलन व स्त्रीलेखन के कारण यह अधिक प्रभावशाली रूप में उभर के सामने आया है। स्त्री अस्मिता व विमर्श को हर व्यक्ति ने अपने–अपने ढंग से स्पष्ट करने की कोशिश की है।

स्त्री अस्मिता से अभिप्राय

स्त्री के स्व के अस्तित्व या उसकी पहचान से है। जब स्त्री अपने समाज व परिवेश में अपने हिसाब से स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है, तब वह परिवार और समाज में अपने अस्तित्व की तलाश करती है। लेकिन धर्म व सामाजिक अर्थव्यवस्था के नाम पर उसे विवाह ओर परिवार से इस तरह बांध दिया जाता है की वह अपनी स्वतंत्रता का विसर्जन और आत्मसमर्पण करने की कीमत पर ही सम्मान की जिंदगी बिता सकती है। इस कारण स्त्री आज तक समाज में बेटी, बहन और माँ के रूप मे ही पहचानी जाती रही है। लेकिन वर्तमान परिपेक्ष्य में स्त्री इन बंधनो से मुक्त होकर स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप मे अपनी पहचान कायम करना चाहती है। यही से प्रारम्भ होती है-स्त्री की अस्मिता की तलाश व स्त्री अस्मिता का विमर्श।

स्त्री विमर्श

स्त्री के आत्मबोध, आत्मविश्लेषण एवं आत्माभिव्यक्ति का संघर्ष है। विमर्श रूढ़ हो चुकी मान्यताओं, परम्पराओं के प्रति असंतोष व उससे मुक्ति का स्वर है। स्त्री विमर्श नारी चेतना के पर्याय के साथ एक समूहिक चेतना है। नारी चेतना स्त्री की अस्मिता से जुड़ा एहसास है। पुरुष प्रधान समाज के दोहरे मापदंडो, मूल्यों व अंतर्विरोधों को समझने व पहचाने की गहरी अंतर्दृष्टि है।

नारी अस्मिता का संघर्ष समाज की अनूठी देन है। साहित्य ओर समाज परस्पर अन्योन्याश्रित है। वह एक – दूसरे को प्रभावित करते हुए परंपरागत मूल्यों के प्रवाह में परिवर्तन लाते है। सकारात्मक परिवर्तन जहाँ समाज को प्रगति की ओर प्रेषित करता है वहाँ नकारात्मक परिवर्तन उसे पतन की ओर धकेलता है। "यंत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" में आस्था रखनेवाले देश मे स्त्री को अस्मिता परिवेश और जीवन मूल्यों के साथ – साथ परिवर्तित होती रही है। इसी संदर्भ मे प्रसिद्ध समाजशास्त्री सिमोन द बोउवार ने "द सेकंड सेक्स" मे कहाँ है कि –"स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती है।" इसी दृष्टिकोण के कारण नारी का जीवन सदैव यातनाओ व त्रासदियों से ओतप्रोत रहा है। समाज की इस मनोवृति के कारण स्त्री को अपने अस्तित्व को पहचान दिलाने हेतु न जाने कितनी प्रतीक्षा करनी होगी|

यह लेख नारी अस्मिता की पहचान व उसके संघर्षमय जीवन की गाथा है।

"छिन्नमस्ता" प्रभा खेतान का बहुचर्चित उपन्यास है जो स्त्री के उत्पीड़न व स्वालम्बन की कहानी है। "छिन्नमस्ता" की प्रिया की शादी से पूर्व की कहानी प्रभाजी की खुद की कहानी है। उच्च्वर्गीय मारवाड़ी परिवार में पाँचवी संतान के रूप में जन्मी प्रिया का बचपन उपेक्षित, कुंठित व भय से आक्रांत है। नौ वर्ष की अल्पायु मे ही उनके पिता का देहांत हो गया। और उनका सारा बचपन माँ व पिता के प्रेम से वंचित रहा| "कैसा अनाथ बचपन था? अम्मा ने अभी मुझे गोद में लेकर चूमा नहीं। मैं चुपचाप घंटो उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती, शायद अम्मा मुझे भीतर बुला ले। बचपन से ही प्रिया के जीवन में यातनाओं का दौर शुरू हो गया। हर समय व हर राह पर सताई जाने वाली प्रिया के शारीरिक शोषण की कहानी उसके परिवार से ही शुरू होती है। प्रिया अपने ही घर में अपने बडे भाई की वासना का शिकार होती है। भाई द्वारा अस्मत खोई बहन का वर्णन करने वाली प्रभा खेतान पहली लेखिका है। प्रभा खेतान कहती है – "सवाल उठता है कि स्त्री जब यौन उत्पीड़न पर कुछ कहना चाहती है तो पुरुष व्यवस्था उसका विरोध क्यों करती है? व्यवस्था इतनी आतंकित क्यों होती है।" वह अपने भाई द्वारा किए गए अपराध के बारे में किसी से कुछ नही कहती है क्योंकि दाई माँ उससे कहती है – "सुन बिटिया! हमारा कहा मान ओर जिंदगी मे ई सब बात किसी से न कहियों। आपन पति परमेसर से भी नहीं। अउर सब समय हमारा साथ रहो। ना बिटिया, हम तोहके छोड़कर कही नहीं जाऊब।"

बचपन के इस घटना के बाद उसे कॉलेज में भी प्रोफेसर के द्वारा वासना का शिकार होना पड़ता है। परंतु वह हर चुनौती का सामना करते हुए घरवालों के विरुद्ध जाकर अपनी पढ़ाई को पूरा करती है। वह अपनी भाभी ओर अम्मा की तरह घुटन भरी जिंदगी नहीं जीना चाहती, क्योंकि उसने प्रोफेसर चेटर्जी से सीखा था कि – "स्त्री होना कोई अपराध नहीं है, पर नारीत्व की आँसू भरी नियति स्वीकारना बहुत बड़ा अपराध है।"

पढ़ाई के पश्चात प्रिया की शादी एक सम्पन्न परिवार में होती है। किन्तु विवाह के कटु अनुभवों से समझ आता है कि धनी परिवार में विवाह होने पर भी स्त्री के जीवन विद्रुपताएँ समाप्त नहीं होती| अत: प्रिया व्यावसायिक जगत में प्रवेश करती है। क्योंकि वह एक भोग की वस्तु बनकर नही रहना चाहती थी। लेकिन नरेन्द्र अपने पति होने का अधिकार प्रिया पर थोपना चाहता था| वह कठोर

शब्दों में कहता है – " दरअसल तुम्हें इतनी खुली छुट देने की गलती मेरी ही थी। मुझे पहले ही चिड़िया के पंख काट डालने चाहिए थे, पर मैं तुम्हारी बातों मे आ गया। तुम्हारे इस भोले चेहरे के पीछे एक मक्कार औरत का चेहरा है।" लेकिन प्रिया इन सब बातों को अनदेखा कर अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाती है। प्रिया के इस सम्मान को बढ़ते वह देख नहीं सकता है और वह प्रिया को कोसते हुए कहता है – "पैसा कमाना तुम्हारी हवस है प्रिया! तुम नारसिसिस्ट हो। तुम्हारी महत्वाकाक्षाएँ दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ती जा रही है।" इस पर प्रिया कहती है कि "क्या महत्वाकांक्षी होना अपराध है। नरेन्द्र उसकी महत्वाकांक्षा नहीं समझ पाया। अपने पति की इसी सोच के कारण प्रिया को उपना घर व बेटे को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। इसके द्वारा प्रभा खेतान इस तथ्य को स्पष्ट करना चाहती है कि नारी की आर्थिक निर्भरता उसकी सोच व मूल्यों में बदलाव ला सकती है। परिवार के शोषण से शोषित प्रिया आत्मनिर्भर होकर स्त्री के संकल्प एवं जीवन की अनुठी मिसाल बनती है।

प्रभाखेतान प्रिया के द्वारा हर नारी को यह संदेश देना चाहती है कि नारी सशक्तिकरण के लिए स्त्री का आर्थिक आत्मनिर्भर होना बहुत आवश्यक है। प्रिया का संघर्ष हर नारी का आत्मसंघर्ष है। अपनों के बीच सभी चुनौतियों का सामना करते हुए साहसी नारी के रूप में प्रिया का चरित्र हमारे सामने प्रखर हो उठता है।

समकालीन परिवेश में प्रिया हर स्त्री के लिए प्रेरक शक्ति है। जो अपने हालातो से लड़ना जानती है। वह जानती है कि कोई भी पुरुष स्त्री के स्थान की पूर्ति नहीं कर सकता है। इसी संदर्भ मे वह अपने दोस्त फिलिप से कहती है –"पुरुष भूमि है, आकाश है, अग्नि है, जल है लेकिन स्त्री बीज बनकर धरती के नीचे दबना जानती है, वक्त आने पर अंकुरित होती है और फिर शाखा – प्रशाखाओं में फैलती हुई पूरा जंगल हो जाती है।

प्रभा खेतान की प्रिया की कहानी नारी के अस्तित्व व आत्मबोध की कहानी है। स्त्री के जीवन की राह में आने वाली हर चुनौतियों से संघर्ष करते हुए अपने लिए नई राह को प्रशस्त करने के संदर्भ में वैशाली देशपांडे लिखती है –"प्रिया का यह व्यवहार आधुनिक नारी के उस रूप को उद्घाटित करता है, जो पुरुष प्रधान समाज के अत्याचार के विरोध में खड़ी रहकर अपनी क्षमता को साबित करती है। शोषण के सामने चुनौती बनकर खड़े रहने की क्षमता आज की नारी मे आ चुकी है और प्रिया उस नारी का प्रतिनिधित्व कर रही है।"

इस उपन्यास में प्रिया आधुनिक नारी शक्ति की पहचान बनकर उभरी है। प्रिया के द्वारा हमें ज्ञात होता है कि इज्जत कोई देता नहीं उसे कमाना पड़ती है। हर परिवेश मे उपेक्षित होने पर भी प्रिया का आशावादी दृष्टिकोण हर स्त्री के लिए एक उदाहरण है।

निष्कर्ष

अन्तत: कह सकते है कि 'छिन्नमस्ता' में नारी अस्मिता से संबंधित विविध आयाम नारी जीवन के तनाव व कुंठा, दांपत्य जीवन की विषगतियों, संघर्ष, आक्रोश, अपनों द्वारा आहत जीवन, नारी जीवन की यातनाएँ आदि का यथार्थ पृष्ठभूमि पर चित्रण किया है। अत: कह सकते है कि "छिन्नमस्ता नारी यातना, विद्रोह एवं मूक्ति की गाथा है।"

इस उपन्यास के द्वारा प्रभाजी ने स्त्री से जुड़ी उस मानसिकता को बदलने पर भी ज़ोर दिया है कि स्त्री व पुरुष में भिन्नता होती है तथा उनमे भेद करना चाहिए। 'छिन्नमस्ता'के द्वारा प्रभाजी ने स्त्री के अस्तित्व व उसके विमर्श एवं नारी संघर्ष व चिंतन के द्वारा नारी को एक नई राह व प्रेरणा देने मे सफलता हासिल की है। इस उपन्यास के द्वारा स्त्री को कई रूपो में उत्याचार व अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते हुए परिलक्षित कर अपनी अस्मिता व अस्तित्व की पहचान हेतु पुरुष प्रधान समाज से संघर्ष करने की हिम्मत व सोच प्रदान करता है।

संदर्भ

1. गोपालराय, छिन्नमस्ता : समीक्षा, डॉ नामवर सिंह (संपा) आधुनिक हिन्दी उपन्यास -२, पृष्ठ ३४४।
2. डॉ बच्चन सिंह, नारी विमर्श, डॉ नगेन्द्र (संपा), हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ४३४।
3. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, डॉ नामवर सिंह (संपा), आधुनिक हिन्दी उपन्यास -२, पृष्ठ ३३१।
4. साहित्य संदेश , सं. महेन्द्र, साहित्य रत्नभंडार आगरा, प्रथम संस्करन १९९५ पृष्ठ ३५५।
5. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, उषा कीर्ति रानावत, पृष्ठ ५।
6. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, उषा कीर्ति रानावत, पृष्ठ ९७।
7. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, डॉ वैशाली पांडे, पृष्ठ १८६।
8. महिला उपन्यासकार, डॉ मधूसन्धु, पृष्ठ ४८।
9. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, प्रो. गोपालराय, पृष्ठ ४२६।
10. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृष्ठ ११।
11. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृष्ठ ४४।
12. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृष्ठ ११७।
13. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृष्ठ १२४।
14. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृष्ठ १५३।
15. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, पृष्ठ २११।